अजायब बानी

मासिक पत्रिका

नवम्बर-2021

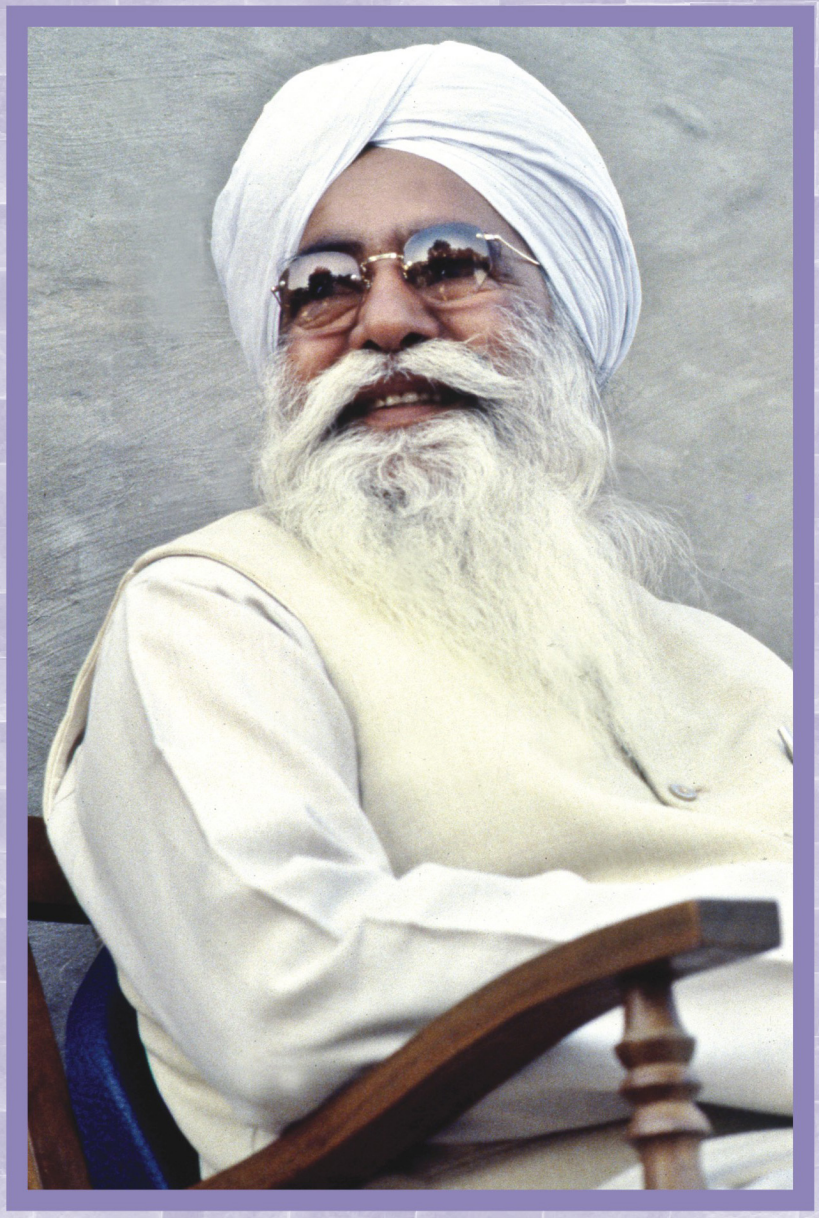

RNI No - RAJHIN/2003/9899

मासिक पत्रिका

अजायब बानी

वर्ष–उन्नीसवां अंक–सातवां नवम्बर–2021

सच्चा प्यार	3
शादी	13
भजन गाने के बारे में	25

प्रकाशक : **सन्तबानी आश्रम** 16 पी.एस. रायसिंह नगर–335 039 जिला–श्री गंगानगर (राजस्थान)
संपादक : **प्रेम प्रकाश छाबड़ा** 99 50 55 66 71 80 79 08 46 01
विशेष सलाहकार : **गुरमेल सिंह नौरिया** 96 67 23 33 04 99 28 92 53 04
उप संपादक : **नन्दनी** सहयोग : **डा. सुखराम सिंह**
e-mail : dhanajaibs@gmail.com 236 Website : www.ajaibbani.org
RSG-01, V.I.P. Colony, Ridhi-Sidhi Enclave Ist, Sri Ganganagar - 335 001 (Rajasthan)

जां होऐ कृपाल तां प्रभु मिलाऐ

जां होऐ कृपाल तां प्रभु मिलाऐ, x 2

1 तप–तप, लोहे–लोहे, हाथ मरोरो, x 2
बाबल होई, सो–सो लोरो, जां होऐ कृपाल.....

2 तै सहे मन मह, किया रोष, x 2
मुझ अवगुण सह, नाहीं दोष, जां होऐ कृपाल.....

3 तै साहेब की मैं, सार ना जाणी, x 2
जौवन खोऐ, पाछे पछतानी, जां होऐ कृपाल.....

4 काली कोयल तूं, कित गुण काली, x 2
अपने प्रीतम के हौं, बिरहो जाली, जां होऐ कृपाल.....

5 पिरह वहून, कतह सुख पाऐ, x 2
जां होऐ कृपाल तां, प्रभु मिलाऐ, जां होऐ कृपाल.....

6 बिघ्न खूटी, मुंध अकेली, x 2
ना कोई साथी, ना कोई बेली, जां होऐ कृपाल.....

7 कर कृपा प्रभ, साध संग मेली, x 2
जां फिर देखां तां मेरा अल्लाह बेली, जां होऐ कृपाल.....

8 वाट हमारी, खरी उडीणी, x 2
खंड्यो तिखी बहुत पईंणी, जां होऐ कृपाल.....

9 उस ऊपर है, मार्ग मेरा, x 2
सेख 'फरीदा' पंथ, समार सवेरा, जां होऐ कृपाल.....

सतसंग– परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

31 मार्च 1987

16 पी.एस.राजस्थान

सच्चा प्यार

शेख फरीद साहब की बानी

DVD No - 532(1)

मैंने इस साल शेख फरीद साहब की बानी पर काफी सतसंग किए हैं और आज भी मैं शेख फरीद साहब की बानी का सतसंग ले रहा हूँ। आपका जन्म मुसलमान घराने में हुआ था, आप सूफी महात्मा की शरण में आए। सूफी का मतलब होता है साफ दिल जहाँ नाम ही नाम हो, दुनिया की कोई मैल न हो। फरीद साहब की जिंदगी के हालात तप–त्याग मेरी जिंदगी से मिलते हैं बल्कि आपने मुझसे भी ज्यादा तप और त्याग किया।

हमारे सतगुरु बाबा सावन सिंह जी कहा करते थे अगर हम सच्चाई के साथ परमात्मा की खोज करें तो हमारी पुकार सुनकर परमात्मा हमें जरूर मिलता है। अगर सच्चे दिल से खोज करते हुए हमारी मृत्यु भी हो जाती है तो अगला इंसानी जामा अच्छा होगा और गुरु जरूर मिलेगा। सच्ची खोज बेकार नहीं जाती, यह खोज परमात्मा के दरबार में भक्ति के बराबर ही होती है।

फरीद साहब अच्छे खानदान में पैदा हुए थे। आपकी शादी उस समय दिल्ली के तख्त पर बैठे बादशाह की लड़की के साथ हुई थी। जब किसी के अंदर परमात्मा से मिलने का **सच्चा प्यार** जागता है तो वह दुनिया के तख्तो–ताज को लात मारकर परमात्मा की खोज में लग जाता है। आपने बहुत भूख–प्यास काटी लेकिन प्यार–प्यार ही होता है।

हमारा जन्म किसी न किसी समाज में होता है। भक्तों और संसारियों का रास्ता एक नहीं होता और न ही इनका मिलाप होता है। दुनिया का रीति–रिवाज और कर्मकांड में विश्वास होता है लेकिन मालिक के प्यारों को मालिक में, परमात्मा में विश्वास होता है।

फरीद साहब मुसलमानों वाले रीति–रिवाज नहीं करते थे। काजियों और मुल्लाओं ने आपकी विरोधता की। उस समय न्याय काजियों के हाथ में था और पढ़ाई का इंतजाम मुल्ला करते थे। मुसलमानों ने फरीद साहब से कहा कि तू नमाज नहीं पढ़ता रोज़े नहीं रखता? फरीद साहब ने बड़े प्यार से कहा कि अपने दस नाखूनों से मेहनत करके पेट भरना ही सच्चा रोज़ा है। न्याय करना, हर जीव पर तरस करना, मौहब्बत करना और सबके अंदर परमात्मा को समझना ही सच्ची नमाज है।

आपके जीवनकाल में एक घटना घटी। कपड़ा बुनने वाले गरीब जुलाहे के घर पर किसी तगड़े जमींदार ने कब्जा कर लिया। जुलाहे ने सोचा कि मैं काजी को एक अच्छी सी पगड़ी दूं ताकि काजी मेरे हक में फैसला कर दे, हाँलाकि मेरा हक बनता है क्योंकि यह मेरा घर है। जुलाहा काजी को एक अच्छी सी पगड़ी बनाकर दे आया और काजी से कहा, ''वह जमींदार बहुत तगड़ा है मेरे घर पर उसका हक नहीं बनता। मैं बाल–बच्चों वाला एक गरीब आदमी हूँ आप मेरे हक में फैसला करके मुझे न्याय देना।''

काजी ने खुश होकर पगड़ी अपने सिर पर बाँध ली। जमींदार तगड़ा था वह काजी के घर एक दूध देने वाली गाय छोड़ आया। काजी रोज दूध पीकर खुशियाँ मनाता और उसके बच्चे भी दूध पीते। जमींदार ने काजी से कहा, ''बेशक मैं झूठा हूँ लेकिन तू न्याय मेरे हक में ही करना।'' काजी ने कहा कि तू बेफिक्र हो जा मुझे दूध बहुत अच्छा लगता है और मेरे बच्चे भी दूध पीकर खुश हैं, न्याय तेरे हक में ही होगा।

जब काजी ने अदालत लगाई तो वे दोनों ही वहाँ पेश हुए। काजी जमींदार के हक में फैसला देने लगा तो जुलाहे ने कहा, ''आप मेरी पगड़ी की तरफ तो देखें।'' काजी ने कहा, ''तेरी पगड़ी की तरफ क्या देखूं उसे तो गाय ने खा लिया है।'' फरीद साहब ने कहा कि यह सच्चा न्याय नहीं। सच्ची नमाज पढ़ना, परमात्मा के आगे प्रार्थना करना ही सच्चा न्याय है।

कबीर साहब के जीवनकाल में भी ऐसी ही घटना घटी थी कि उस समय के न्यायकार दोनों तरफ से खा लेते थे लेकिन गरीब के हक में कुछ नहीं करते थे। आप कहते हैंः

काजी मुल्ला जो लिख दिया छाड़ चले हम कछु न लिया

काजी–मुल्ला ने जो रीति–रिवाज चलाया है उसे छोड़कर हम परमात्मा की भक्ति करने लगे हैं। फरीद साहब के अंदर अपने गुरु के लिए सच्ची श्रद्धा, **सच्चा प्यार** था। आपने गुरुमत को सच्चे दिल से पकड़ा था। जो जुबान पर था वही दिल में था। आपने अपने गुरु के पास रहकर अपने गुरु की काफी सेवा की।

फरीद साहब के जीवन की एक सच्ची घटना है। एक वेश्या औरत फरीद साहब के घर के पास रहती थी। वह औरत सदा फरीद साहब के साथ मजाक करती और आपको अपने जाल में फँसाने की कोशिश करती थी। जब सच्चे दिल से भक्ति करें तो काल किसी न किसी में बैठकर ऐसा जाल फैला ही लेता है।

उस समय आजकल की तरह आग जलाने के लिए माचिस नहीं होती थी, न ही अग्नि के खास साधन होते थे। आमतौर पर लोग अपने घरों में अग्नि दबा लेते थे, कई बार अग्नि बुझ जाती थी तो काफी समस्या होती थी। इसी तरह एक दिन उनकी अग्नि बुझ गई बहुत कोशिश की लेकिन आग नहीं जली। पड़ोस में लैंप जल रहा था, वेश्या हुक्का पी रही थी गुड़गुड़ाहट की आवाज आई तो फरीद साहब उस तरफ चले गए।

उस औरत ने सोचा पहले तो यह कभी कुछ नहीं बोलता था अच्छा हुआ आज खुद ही आ गया। औरत ने आपसे पूछा कि तू कैसे आया है? फरीद साहब ने कहा माता! हमारी आग बुझ गई है तू आग दे दे। औरत ने मजाक के तौर पर कहा कि आग की कीमत आँख है। फरीद साहब ने कुछ नहीं सोचा अपनी आँख निकालकर उस औरत को दे दी। वह औरत

बहुत डरी कि मैंने तो इससे मजाक किया था लेकिन यह तो सीधा–साधा भक्त आदमी है। औरत ने फरीद को आग दे दी। फरीद साहब ने अपनी आँख पर पट्टी बाँध ली। फरीद ने आग पर पानी गर्म करके अपने मुर्शिद को नहलाया तो मुर्शिद ने झाँककर देखा और पूछा, ''फरीद! तूने आँख पर पट्टी क्यों बाँधी है?'' पंजाबी में आम कहावत है अगर किसी की आँख में दर्द हो तो कह देते हैं कि आँख आई हुई है। फरीद ने कहा कि आँख आई हुई है। मुर्शिद ने कहा कि जब आँख आई हुई है तो तूने पट्टी क्यों बाँधी है, तू पट्टी खोल दे। जब फरीद ने पट्टी खोली तो दोनों आँखें एक जैसी थी। फरीद साहब गुरु प्यार में सच्चे भक्त थे।

सन्त हमेशा ही कहते हैं कि आप मन के धोखे से बचें, मन के फरेबों से बचें यह मन आपके पीछे नाम की पूँजी लूटने के लिए लगा हुआ है। अगर हमारे साथ ऐसी कोई घटना घटे तो क्या हम बचे रह सकते हैं, क्या हम गुरु के लिए ऐसी कुर्बानी कर सकते हैं?

दिलहु मुहबति जिन्न सेई सचिआ।।
जिन मनि होरु मुखि होरु सि काँढे कचिआ।।

फरीद साहब प्यार से समझाते हैं कि गुरु–परमात्मा के दरबार में वे सच्चे हैं जिनके दिल में मौहब्बत है। हुजूर कृपाल कहा करते थे, ''दिल को दिल से राह होती है।'' जिनके मन में कुछ और है और जुबान पर कुछ और है वे कच्चे हैं। जब गुरु–परमात्मा परखता है तो वह कच्चों को अलग कर देता है और पक्कों को परखकर अपने खजाने में दाखिल कर लेता है।

हिन्दुस्तान में नोट प्रचलित हुए थोड़ा ही समय हुआ है। जब हम छोटे थे उस समय आमतौर पर चाँदी की करंसी होती थी। उस वक्त के हालात देखकर गुरु नानकदेव जी ने चाँदी के रूपये की मिसाल दी है कि जब लोग सरकार का टैक्स चुकाने के लिए जाते थे उस समय चाँदी की करंसी दी जाती थी। खजांची रूपयों को अच्छी तरह से परखता था जिस रूपये में

सही चाँदी होती थी उसे खजाने में दाखिल कर लेता था और जिन रुपयों में मिलावट होती थी उन्हें टक लगाकर बाहर फैंक देता था। गुरु नानकदेव जी ने उस समय की मिसाल दी हैः

खरे परख खजाने पायन खोटे भरम भुलामंणया

इसी तरह परमात्मा हर जन्म के बाद हमारी परख करता है कि क्या ये खरे हैं? अगर हम खरे उतरते हैं तो वह हमें अपने खजाने सच्चखंड में दाखिल कर लेता है अगर हम मन इन्द्रियों, विषय–विकारों में लिपटे हुए खोटे हो चुके हैं तो परमात्मा हमें फिर इस संसार में ही जन्म दे देता है। गुरु नानकदेव जी कहते हैंः

उगड़ गया ऐह खोटा डबुआ जद नदर सर्राफा आया

अगर पाखंडी गुरु का सच्चे शिष्य से मिलाप होता है तो उसका भी आवरण उतर जाता है कि यह मन–इन्द्रियों का गुलाम है। इसी तरह जब हमें सच्चे सन्त–सतगुरु मिलते हैं तो दिखावे के भक्त शर्मिन्दा हो जाते हैं। वे गुरु के साथ आँख नहीं मिला सकते सिर झुकाकर बैठ जाते हैं, आँख उठाकर नहीं देख सकते क्योंकि हमारे पाप हमें ऊपर नहीं देखने देते।

जो महात्मा ऊपर से तो मीठी बातें करते हैं, अच्छे–अच्छे भाषण देते हैं लेकिन उनके मन में कुछ और है और मुँह पर कुछ और है, वे कच्चे हैं। आप उनके पास जाकर कभी पक नहीं सकते। किसी भी महात्मा की शरण में जाने से पहले अच्छी तरह देखें क्या इस महात्मा ने बीस–तीस साल कोई भजन–अभ्यास किया है, क्या यह अब भजन करता है और इसकी रहनी–बोलनी कैसी है, कहीं यह हमें किताबी ज्ञान तो नहीं दे रहा?

सच्चाई का बीज नाश नहीं होता। आज गुरुडम इसलिए नफरत का शिकार है क्योंकि साँप का डसा हुआ इंसान रस्सियों से भी डरता है। एक जगह धोखा खाता है तो जगह–जगह बेविश्वासा हुआ फिरता है। हम जब तक मन–इन्द्रियों का साथ नहीं छोड़ते तब तक कामयाब नहीं हो सकते अंदर परमात्मा दरवाजा नहीं खोलता।

हमारे सतगुरु महाराज कृपाल अच्छे पढ़े–लिखे काफी बड़े लेखक थे लेकिन उन्होंने यह कभी नहीं कहा कि जो अच्छा लेक्चर दे लेता है या जिसके पास ज्यादा भीड़ होती है वही पूरा महात्मा है। महाराज सावन सिंह जी भी यही कहा करते थे कि जो महात्मा अंदर जाता है वह जो कुछ मुँह से कहता है वही उसके दिल में है। ऐसे महात्मा आप तर जाते हैं और अपनी संगत को भी तार लेते हैं।

मैं जब शुरु–शुरु में दिल्ली गया तो मुझे महाराज कृपाल के बहुत से सतसंगी मिले जिनका आमतौर पर मुझसे यही सवाल था कि इस ग्रंथ में यह लिखा है, उस ग्रंथ में वह लिखा है। मैंने उन सबसे यही कहा कि मेरी पहले भी यही बात थी और आज भी यही बात है। ग्रंथ–किताबें जहाँ से निकली हैं ये इंसान की सोचने की शक्ति है। आप उस जगह पहुँच जाएं तो आपको बाहर के किसी भी ग्रंथ की मिसाल देने की जरूरत नहीं। कबीर साहब कहते हैंः

तू कहता है पुस्तक देखी हम कहते हैं आँखों देखी।

अकबर बादशाह ने बीरबल से पूछा कि झूठ और सच में कितना फर्क है? बीरबल ने कहा जितना कान और आँख का फर्क है। कान के साथ सुनी बात पर यकीन कर लेना और बात है लेकिन जो आँख से देखा है वही सच्चाई है।

रते इसिक खुदाइि रंगि दीदार के।।

आप कहते हैं कि जो परमात्मा शब्द में रच गए हैं उनका खाना–पीना, उठना–बैठना खुदा का दीदार है, वही सच्चे आशिक हैं वही परमात्मा से **सच्चा प्यार** करते हैं। कबीर साहब ने कहा था, ''हे सतगुरु! अगर तू मेरी आँख में आ जाए तो मैं आँख बंद कर लूँ न मैं किसी को देखूँ और न तुझे ही किसी की तरफ देखने दूं।'' इसका नाम **सच्चा प्यार,** सच्ची भक्ति है। ऐसा प्रेमी हर एक के अंदर अपने गुरु को देखता है।

प्यारेयो! जब क्राईस्ट को सूली पर चढ़ाने लगे तो परमात्मा ने क्राईस्ट से पूछा, ''इन लोगों को क्या सजा दूं?'' क्राईस्ट ने कहा, ''ये लोग भोले हैं, अंजान हैं तू इन्हें माफ कर दे।'' वह यही आँखें थी जिसकी वजह से क्राईस्ट उनको माफ करने के लिए कह रहा था क्योंकि वे क्राईस्ट को अपने ही दिखाई दे रहे थे।

विसरिआ जिन नामु ते भुइ भारु थीए।।

फरीद साहब कहते हैं कि उन जीवों के भार से धरती काँपती है जो 'शब्द–नाम' की कमाई नहीं करते। कबीर साहब कहते हैंः

जो प्रभ किए भगत ते वाहंज तिनसे सदा डराने रहिए

जिन्हें प्रभु ने अपनी भक्ति के लिए नहीं चुना या अपनी नाम भक्ति का दान नहीं दिया उनसे सदा ही डरें क्योंकि वे परमात्मा की भक्ति नहीं कर रहे बल्कि अपने ही अहंकार में डूबे हुए हैं।

आपि लीए लड़ि लाइ दरि दरवेस से।।

सच्चे फकीर, सच्चे दरवेश, सच्चे भक्त वही हैं जिन्हें परमात्मा ने अपने गले से लगाया, घर आकर ही अपनी भक्ति का दान दे गए।

तिन धन्नु जणेदी माउ आए सफलु से।।

आप कहते हैं जिसके घर के अंदर वह बालक बनकर खेला वह पिता धन्य था। जिसकी माँ की कोख को भाग्य लगा दिए वह माता भी धन्य थी। उस माता–पिता और बच्चे का संसार में आना सफल हो गया।

आपको पता ही है कि जो महात्मा पहले हो चुके हैं हम उनके माता–पिता का बहुत सत्कार करते हैं। जिस तरह आज भी बहुत से लोग गुरु नानकदेव जी के माता–पिता को मानते हैं। हमारे सतगुरु बाबा सावन सिंह जी के माता–पिता का नाम हम बहुत चाव से लेते हैं। इसी तरह हुजूर कृपाल के माता–पिता को हम कितनी बड़ाई देते हैं कि हुक्म सिंह धन्य

था जिसके घर में कृपा करने वाला बालक कृपाल आया। उनकी माता गुलाब देवी को भी बधाईयाँ देते हैं कि जिसकी कोख से ऐसा लाल पैदा हुआ, जिसने दुनिया को नाम की रंगत चढ़ा दी।

गुरु नानकदेव जी ने अपनी बानी में लिखा है कि वह कुल धन्य है, वह जननी धन्य है जिसने गुरु को पैदा किया। वह सतगुरु धन्य है जो पैदा होकर संसार की मैलों में नहीं फँसा। उसने नाम की कमाई की, परमात्मा से खुशी का प्रमाण पत्र प्राप्त किया। जो उसकी शरण में आता है उसे परमात्मा बख्श देता है।

परवदगार अपार अगम बेअंत तू।।

हे परमात्मा! तू सबकी परवरिश करता है तू अगम है, तेरी गमता को कोई लख नहीं सकता।

जिना पछाता सचु चुंमा पैर मूं।।

फरीद साहब कहते हैं कि तू सबकी परवरिश करता है, तू अगम है बेअंत है अपार है। जिन्होंने तुझे पहचान लिया जो तेरे साथ मिल गए, मैं अपने मुँह से उनके पैर चूमने के लिए तैयार हूँ। अगर मेरे ऊँचे भाग्य हैं तो मुझे उनके पैर चूमने का मौका दे दे।

तेरी पनह खुदाइ तू बखसंदगी।।
सेख फरीदै खैरु दीजै बंदगी।।

अब आप कहते हैं कि तू बख्शिंद है इसलिए मैं तेरी शरण में आया हूँ, मैं भक्ति और बंदगी की खैर माँगता हूँ। हे सतगुरु परमात्मा! मैं तेरे दर पर खाली झोली लेकर आया हूँ, तू मेरी खाली झोली को भक्ति के पदार्थ से भर दे।

***

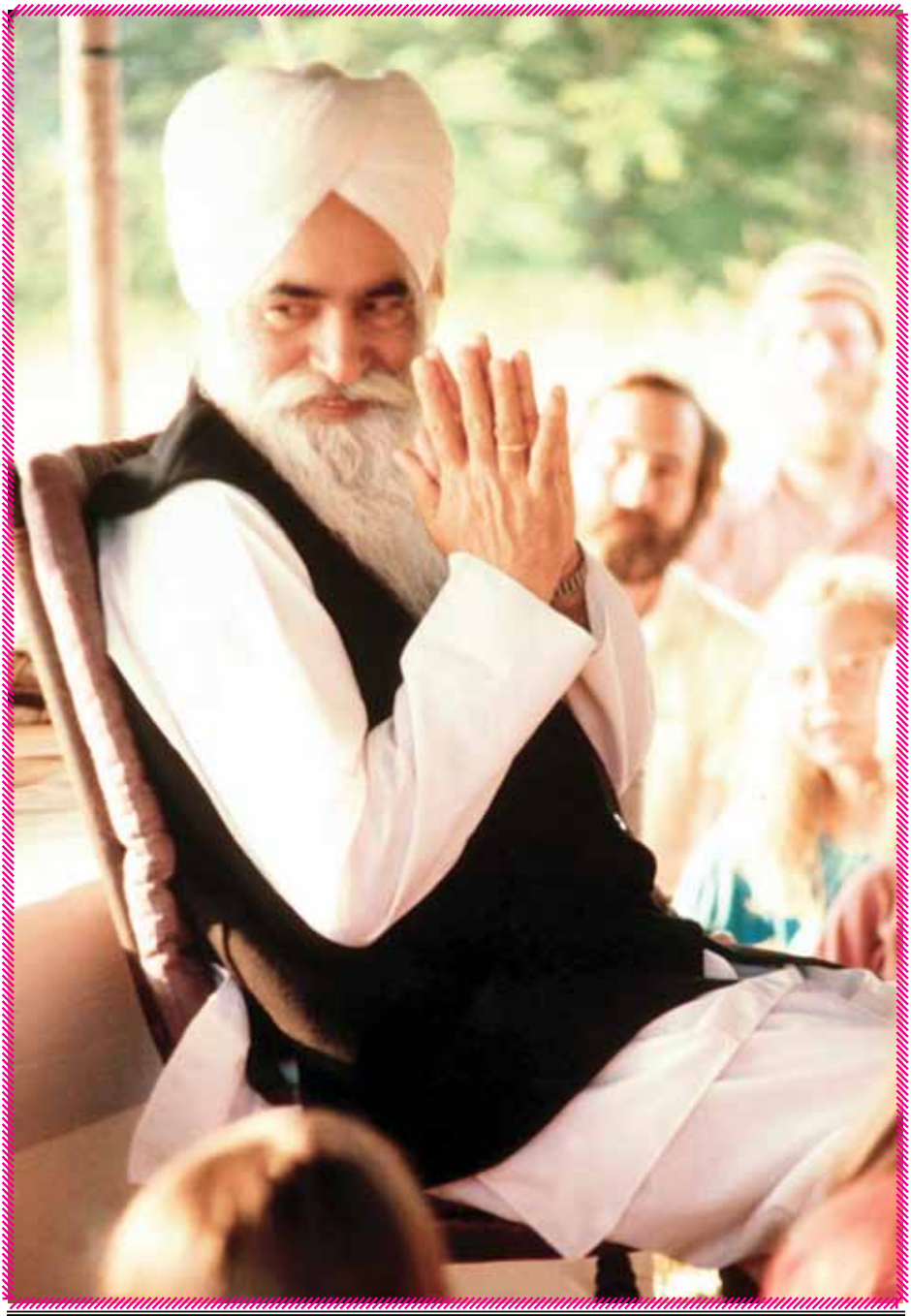

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज के मुखारविंद से....

05 जुलाई 1989

शादी

शेर, बकरे, मच्छर और इंसान सभी में आत्मा है। आत्मा में कोई फर्क नहीं होता अगर हम बच्चे में भी वही आत्मा समझकर उससे प्यार करेंगे तो हम अपने घर को स्वर्ग बना लेंगे। मेरे पास संसार के कोने–कोने से प्रेमी आते हैं। शुरु–शुरु में अंग्रेजो को काफी समस्या थी कि बाबा जी शादी–शुदा नहीं हैं शायद! **शादी** के खिलाफ कुछ कहेंगे लेकिन जब बातचीत हुई तो मैंने पूछा, ''शादी का क्या मतलब है?''

जब मैंने शादी के ठोस परिणाम बताए तो सारे खुश हुए कि हमने शादी किसलिए करनी है? किसी के साथ मिलकर अपने जीवन का सफर आसान बनाना है, अपनी जिंदगी को स्वर्ग बनाना है और एक–दूसरे की मदद करना है। ऐसा हम तभी करेंगे जब हम अपनी ड्यूटी समझेंगे अगर हम अपनी ड्यूटी नहीं समझेंगे तो **शादी** को स्वर्ग कैसे बनाएंगे? अगर औरत, पति की निन्दा करती है, पति औरत की निन्दा करता है, औरत पति को देखकर खुश न हो और पति औरत को देखकर खुश न हो तो वह घर कैसे स्वर्ग बन सकता है? वह घर कभी स्वर्ग नहीं बन सकता।

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे कि आप अपना जीवन प्यार भरा बनाएं। जो लोग भोग–वासना को शादी समझते हैं वे अपना जीवन बिगाड़ लेते हैं। एक दूसरे की इज्जत करना हमारा धर्म है। जो लोग यह कहते हैं कि हमारा दिल **शादी** करवाने का नहीं है तो मैं उनसे यही कहता हूँ कि देख लो अगर अकेले जिंदगी काट सकते हो। ऐसा न हो कि जगह–जगह बेइज्जत होते रहो। सन्त शादी को बुरा नहीं कहते। जितने दिन इकट्ठे हैं एक दूसरे के साँझीवाल बनें, एक दूसरे के सुख–दुःख को समझें।

बच्चा सोच–समझकर पैदा करें। बच्चा पैदा करें तो हमारा फर्ज बनता है कि एक–दूसरे के साथ मिलकर चलें। महाराज कृपाल ने कहा है, ''दिल को दिल से राह होती है अगर हम बच्चों के लिए अच्छा सोचेंगे तो वे भी हमारे लिए जरूर अच्छा सोचेंगे।'' ऋषि–मुनी भी यही कहते हैं कि पाँच साल तक बच्चे को हमारी जरूरत होती है उसके बाद बच्चा स्याना हो जाता है, उसे सलाह की जरूरत पड़ती है। माँ–बाप उसे नेक सलाह दें। जब बच्चा पंद्रह साल का हो जाता है तो वह भाई के बराबर हो जाता है। पहले हम उस बच्चे के साथ लाड–प्यार करते हैं फिर उसकी **शादी** करके उसके साथ लड़ना शुरु कर देते हैं, घर में खटपटी मच जाती है। हमें घर में नाम जपना चाहिए। मर्द के दिल में औरत के लिए इज्जत और औरत के दिल में मर्द के लिए इज्जत होनी चाहिए, वही घर स्वर्ग है। गुरु नानकदेव जी ने सारी बानी में यही कहा है:

धन पिर ऐह न आखिए रहन इकट्ठे होय
एक जोत दोय मूर्ति धन पिर कहिए सोय

वे औरत–मर्द नहीं जिन्होंने दुनियावी तौर पर पल्ला पकड़ लिया। अलग–अलग शरीरों में रहते हुए एक जोत हों तभी वह **शादी** कामयाब है।

सतियां ऐह न आखिए मड़यां लग जलन
सतियां ओही आखिएं जो बिरह चोट मरन

वे सतियां नहीं होती जो चिता में जल जाती हैं, सच्ची सतियां वे हैं जिनके दिल में विरह है। हम सबको नाम जपना चाहिए, नाम की शरण लेनी चाहिए अपने जीवन को, अपने घर को स्वर्ग बनाना चाहिए। जो इस दुनिया में कानून के मुताबिक नहीं चलता उसे पुलिस पकड़ लेती है।

बेशक पिता अपने बच्चे की बुरी हरकतों से खुश नहीं होता फिर भी प्यार में बंधा हुआ पिता कोर्ट में जाकर अपील करता है। हमारी आत्मा सतपुरुष कुलमालिक की बच्ची है, यह स्थूल मन के देश में आ गई है। यह भूल गई है कि मैं किसकी बच्ची हूँ। इसने मन के पीछे लगकर अयोग्य

हरकतें की, अयोग्य हरकतें पाप–पुण्य है। हमें न पापों का ज्ञान है न पुण्यों का ही ज्ञान है। हम बहुत सारे कर्म पुण्य समझकर करते हैं लेकिन उनमें पाप छिपा होता है। सभी सन्तों ने कहा है कि पुण्य भी सोच–समझकर करें। आप विचारें क्या यह दान के योग्य है? सबसे ऊँचा दान नाम का है।

बेशक सब धर्म कहते हैं कि ब्रह्मा दुनिया का रचयिता है लेकिन यह सच्चाई नहीं, ब्रह्मा का राज्य सिर्फ दो मंडलों तक है। वहाँ भी यह नई रूह नहीं बना सकता और पहली रूह को खत्म नहीं कर सकता। काल का काम दो मंडलों का इंतजाम करना है फिर काल अपने अवतार संसार में भेजता है, वे भी संसार में आकर अपनी शक्ति दिखाते हैं, दुनिया को अपने पीछे लगाते हैं। सन्त पाँचवें मंडल से आते हैं। सन्त कहते हैं कि मीट–शराब जैसा कोई बुरा कर्म नहीं। दुनिया को करामात दिखाकर अपने पीछे लगाना बुरी बात है, इससे परमार्थ में तरक्की नहीं होती।

बेशक सारी दुनिया कहती है कि हम गुरु वाले हैं, हम गुरुमत पर चलते हैं लेकिन नाम लेने के बाद पता चलता है कि हम पहले गुरुमत पर चलते थे या अब गुरुमत पर चलने लगे हैं। **शादी** के आनन्द का पता शादी करवाने के बाद ही लगता है कि इसमें दु:ख–तकलीफ है या कोई रस है? जिस इंसान ने शादी नहीं करवाई उसे क्या पता है? इसी तरह गुरु मिलने से पता लगता है कि गुरु किसे कहते हैं?

जिस तरह ममता में बंधा हुआ पिता अपने भूले हुए बच्चे को छुड़वाने के लिए कोर्ट में अपील करता है उसी तरह जब आत्मा दु:खी होती है तो ममता से बंधा हुआ परमात्मा इंसानों में इंसान बनकर आता है। इंसान तो वह सिर्फ समझाने के लिए होता है लेकिन वह एक और रूप भी रखता है जिसे हम शब्द रूप कहते हैं।

जिसका गुरु से फायदा होता है उसका हृदय प्यार से गद्‌गद् हो जाना चाहिए। उसे दुनिया में अपने गुरु का नाम प्यार और भरोसे से बताना

चाहिए कि मैं किसका शिष्य हूँ, गुरु का नाम छिपाना महापाप है। बहुत से लोग दुनिया को खुश करने के लिए अपने गुरु का नाम छिपा लेते हैं कि हमारी मान–बड़ाई को धब्बा न लग जाए। गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

जो गुरु गोपया आपणा सो भला नहीं पंचो।

जो गुरु का नाम छिपाता है वह घोर पापी है। गुरु ने उसकी खातिर टट्टी–पेशाब का चोला धारण किया, बिमारियों का खोल पहना। गुरु उसे ले जाने के लिए संसार में आया।

मैं सावन–कृपाल का धन्यवादी हूँ जिन्होंने मेरे ऊपर दया–मेहर की। गुरु से मिलने पर पता लगता है कि गुरु किस तरह अंदर हमारी मदद करता है और बाहर भी दुनियावी तौर पर मदद करता है। हम जीव सांसारिक धंधे करते हैं, काल ने हमारे गले में जंजाल डाला हुआ है जो हमने यहीं छोड़ जाना है। यहाँ न बेटे–बेटी वाला सुखी है, न धन–दौलत वाला ही सुखी है। बेचारा गरीब तो क्या सुखी होगा जिसे दिन–रात रोटी का फिक्र पड़ा है। अमीरों की हालत देख लें उन्हें रात को नींद नहीं आती।

जब गुरु दया–मेहर करता है तो वह नामदान देता है। धन का मिलना या मान–बड़ाई का मिलना कोई मुश्किल नहीं क्योंकि यह दुनियावी चीज है लेकिन नाम का मिलना बहुत मुश्किल है। पता नहीं हम कितने जन्मों में पुण्य करते हैं जब वह पुण्य जमा हो जाते हैं तब वह प्रभु हमें ईनाम देना चाहता है कि मैं इसे ईनाम दूं, यह मेरी खातिर बहुत कुछ कर चुका है। परमात्मा सबसे पहले हमें साधु–संगत में लाता है, हमारे अंदर नाम का शौंक पैदा करता है। हम भी नाम लेकर भवसागर से पार हो जाते हैं। गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

नाम हीण नक्टे नर देखे तिन घस घस नाक बडीजे।

नाम के अलावा जप–तप, तीर्थ करने से जीव नर्क में जाता है। मैं सुनी–सुनाई बातें नहीं कहता, आँखों से देखी हुई बात कहता हूँ:

नानक दास मुख ते जो बोले ईहां ऊहां सच होवे।

मैं जो बोलता हूँ वह यहाँ भी सच है और आगे भी सच है। मैंने आँखों से देखा है कि जिनके पास 'शब्द–नाम' नहीं काल उनके नाक घिसा–घिसाकर काटता है। जब उनका हिसाब होता है तब प्रभु हर आदमी से पूछता है कि तूने दुनिया में क्या किया और तुझे क्या करना चाहिए था? टेप में सब कुछ दर्ज हो जाता है। हमारे अंदर एक तरफ चित्र है और दूसरी तरफ गुप्त है, ये दोनों हमारे दिन–रात का लेखा रखते हैं। एक पुण्य का लेखा रखता है और दूसरा पाप का लेखा रखता है। यह जीव आगे जाकर सब कुछ अपनी आँखों से देख लेता है कि यह मेरा ईमालनामा है। मैं यह सब करके आया हूँ तो यह किस तरह मुकर सकता है? फिर परमात्मा कहता है कि मैंने अपने प्यारे बच्चे महात्मा संसार में भेजे थे, क्या तुझे उनकी जानकारी नहीं हुई, क्या वे तुझसे फीस माँगते थे?

आप सोचकर देखें! यह इंसान क्या कहेगा कि सन्त हमसे फीस माँगते थे या हमारे ऊपर कोई बोझ लादते थे। पहले जमाने में बहुत कड़ी सजाएं होती थी। लोहे की चारपाई गर्म करके अपराधियों को उसके ऊपर डाला जाता था। कोड़ों से उनका माँस उतारा जाता था। आज भी अपराधियों को कितनी यातनाएं दी जाती हैं, जैसा अपराध वैसी सजा। जब दुनिया का कानून माफ नहीं करता तो क्या भगवान का कानून माफ करेगा? परमात्मा जब दु:खी आत्मा की पुकार सुनता है तो उस आत्मा को सबसे पहले संगत में लाता है। तुलसी साहब कहते हैं:

धन दारा सुत लक्ष्मी पापी के भी होए
सन्त समागम हर कथा तुलसी दुर्लभ होए

धन पापियों के पास भी है और बेटे–बेटियाँ सुअरों के भी हैं। जानवर भी भोग भोगते हैं नींद उन्हें भी आती है भूख उन्हें भी लगती है। सन्तों की संगत और नाम का मिलना दुर्लभ चीज है। नाम का मिलना ही मुश्किल है। पल्टू साहब कहते हैं, ''सारी दुनिया नाम का होका देती है क्या हमनें

कभी ठंडे दिल से सोचा कि नाम क्या शक्ति है, नाम क्या ताकत है; नाम कहाँ से मिलता है?'' गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

जिस वक्खर को लैण तू आया राम नाम सन्तन घर पाया
तज अभिमान लहो मन मोल राम नाम हिरदे में तोल

भ्रावा! तू इस संसार में जिस सौदे को लेने के लिए आया है वह सौदा 'नाम' सन्तों के पास है। अब प्रभु ने तुझे मौका दिया है आगे चलकर तेरा अभिमान किसी काम नहीं आएगा। कबूतरबाज ने कबूतरों को पकड़ने के लिए बादाम और ठंडा पानी रखा होता है कि कबूतर आएगा तो मैं उसे दूँगा लेकिन कबूतर उसे खा नहीं सकता उसका खाना प्याली में ही रखा रह जाता है। कबूतर आसमान में उड़ जाता है बाजियाँ लगाता है ऊपर-नीचे होता है, खुशी में मौत को भूल जाता है। थोड़ी देर बाद ही बाज उसे आसमान में पकड़ लेता है, कबूतर कलाबाजियाँ लगाना भूल जाता है।

इसी तरह नीले और काले हिरन को अंगूरी खाने का बहुत शौक होता है। अंगूरी में बहुत रस होता है, बहुत ताकत होती है। हिरन जंगल में मस्त फिरता है, चौदह-चौदह फुट ऊँची छलाँगें लगाता है लेकिन हिरन को यह नहीं पता होता कि मेरे पीछे शिकारी घूम रहा है, वह शिकारी मुझे हाँडियों में चढ़ा देगा फिर मेरी क्या हालत होगी?

इंसानी जामा हीरे की तरह है लेकिन हम यहाँ मस्त हुए फिर रहे हैं। विषय-विकार, अच्छे-अच्छे खाने वह अंगूरियाँ हैं। हम अपनी मौत को भूले हुए हैं क्या हमने कभी सोचा कि काल की क्या प्लेनिंग है, प्रभु की क्या प्लेनिंग है क्या वह हमसे पूछकर हमें ले जाएगा?

महात्मा हमें बताते हैं कि तुझे जिस रास्ते से जाना है कोई उसे अजल की वेल कहता है और कोई उसे दुःखों की नदी कहता है। महात्माओं ने उसके अलग-अलग नाम रखे हुए हैं। पापी लोगों को अजल की वेल में बिठाया जाता है। जैसे यहाँ ट्रेन में टी.टी. टिकट चेक करते हैं उसी तरह

उस वेल में काल के दूत चेक करते हैं। यहाँ हम रिश्वत देकर या मिन्नते करके छूट जाते हैं क्योंकि यहाँ के टी.टी. का दिल माँस और खून का है जिनमें थोड़ा बहुत रहम हो सकता है लेकिन उस अजल की वेल में जो टी.टी. हैं उनके दिल पत्थर के हैं वे बिल्कुल तरस नहीं करते।

जिनके पास नाम की टिकट नहीं उनकी जान पर बन जाती है लेकिन उस समय क्या बनता है? उस समय सोचने से कुछ नहीं बनता क्योंकि उस समय टिकट नहीं कटवाई जा सकती। यह जिंदगी की लापरवाही है जो हम यह कह देते हैं कि हमें किसी महात्मा की जरूरत नहीं। जिन लोगों को महात्मा की जरूरत नहीं उन्हें भगवान की क्या जरूरत हो सकती है?

महाराज सावन सिंह जी अपनी जिंदगी का एक वाक्या बताया करते थे कि उनका एक चाचा था उसकी घरवाली के पास नाम था। घरवाली ने सदा ही कहना कि हम डेरे जाकर नाम ले आते हैं। वह कहता, ''हाँ चलेंगे। अभी मेरा कोट नहीं बना, कभी कह देता अभी मुझे समय नहीं अगली बार जरूर चलेंगे।'' मौत किसका इंतजार करती है? मौत ने आकर गला दबाया कष्ट हुआ तो कहने लगा, ''काके की माँ, यमदूत मेरा हाथ–मुँह काला कर रहे हैं मेरे हाथ जला रहे हैं।'' उसकी घरवाली ने कहा, ''मैं तुझे सदा कहती थी लेकिन तू माना नहीं।''

मेरा चश्मदीद वाक्या राजा कपूरथला का है, राजा की धर्मपत्नी महाराज सावन सिंह जी के चरणों में गई। रानी जिस औरत के साथ वहाँ गई थी उस औरत ने कहा कि यह रानी कपूरथला है। महाराज सावन ने कहा कि हम तेरा स्वागत करते हैं। महाराज जी ने रानी को पढ़ने के लिए कुछ किताबें दी कि इन्हें पढ़कर तुझे पता लगेगा कि नाम क्या दौलत है?

जब रानी को समझ आई तो उसने महाराज जी से विनती की और नाम ले लिया। रानी सदा ही राजा से कहती रही कि दात बाँटने वाला आया है अब मौका है दात ले लो। राजा ने कहा कि मैं चला तो जाऊँ

लेकिन प्रजा क्या कहेगी कि राजा साधु के पीछे फिरता है? यह तो प्रभु की मौज है कि किसे नाम देना है किसे नहीं देना। उस समय सरकार में खटपटी मची हुई थी। डेढ़ साल बाद राज्य छिन गया, जब राजा की मौत हुई उस समय मैं कपूरथला में ही था। राजा उस समय पछता रहा था कि मुझसे तो अच्छी वह वेश्या है जो महाराज जी से नाम ले आई।

सन्त दिलों की जानते हैं लेकिन जाहिर नहीं करते। कपूरथला में एक वेश्या थी। महाराज सावन सिंह जी ने उससे पूछा, ''तू क्या करती है?'' उसने कहा, ''सच्चे पातशाह, मैं कपूरथला की मशहूर वेश्या हूँ मेरे पास बहुत अमीर लोग आते हैं।'' महाराज जी ने कहा, ''अब बता?'' उसने कहा, ''मैं अब तौबा करती हूँ।'' महाराज जी ने कहा कि यहाँ पर काफी औरतें बैठी हैं मैंने इनसे पूछा था कि आपमें से कोई पाप भी करती है? किसी ने नहीं बताया कि मैं कोई पाप करती हूँ। हुजूर ने उस वेश्या से कहा, ''तू मेरी बेटी है।'' महाराज जी ने उसके ऊपर नजर डालकर उसके सारे पाप खत्म कर दिए। राजा ने आखिरी वक्त याद किया कि मुझसे तो वह वेश्या ही अच्छी है।

सन्तों के पास पापी आए चाहे पुन्नी आए लेकिन जब नाम ले लिया तो वहीं खड़ा हो जाए। आप जानते हैं:

गुरु बेचारा क्या करे जे सिक्खन में चूक
अंधे एक न लग्गी ज्यों बाँस बजाई फूंक

हमारे सतसंग में रोहतक का एक कसाई आया करता था। कई बार आत्मप्रकाश, उसके जवाई और कसाई की पत्नी ने भी विनती की, ''महाराज जी दया करें।'' मैं कहता कि यह मेरा नहीं गुरुदेव का काम है, पता नहीं उन्हें क्या मंजूर है? वह कसाई कई बार यहाँ आया, बर्तन साफ करता रहा। धीरे–धीरे उसके दिल की मैल उतर गई, आजकल वह फरीदाबाद में छोले बेचकर अपनी गुजर करता है और उसने कसाई का

काम छोड़ दिया। अब आप देख सकते हैं कोई ऐसा आदमी है जो किसी को इतने पापों से हटा दे। वह सिर्फ सन्त ही हैं जो हमारे ऊपर दया करने के लिए आते हैं। भाग्यशाली जीव फायदा उठा जाते हैं और दूसरे ऐसे ही रह जाते हैं, ऊँचे भाग्य हो तभी हम इस तरफ आ सकते हैं।

कुछ समय पहले मैं रोम गया था। आपको पता है कि रोम कैथोलिक लोगों का गढ़ है। वहाँ मुझे कई पादरियों और ननों से मिलने का मौका मिला। हाँलाकि वे मुझे देखने के लिए और बात करने के लिए आए थे लेकिन जब सतसंग सुना तो उन्हें समझ आई कि असली ईसा का संदेश कौन दे रहा है, असली ईसा कौन है? हमारी आँखें क्यों बंद हैं वह तो हमारे सामने बैठा है। कई पादरियों और ननों ने नाम लिया।

प्यारेयो, यह तो भाग्य की बात है ऊँचे भाग्य हो तभी हम इस तरफ आते हैं। गुरु प्यार देने के लिए ही आता है, जब हम अपने आपको उसके सहारे छोड़ देते हैं तो वह हमारे दुनियावी काम भी करता है। मेरे बुजुर्गों को मेरा काफी ख्याल रहता था। उन्होंने बाबा बिशनदास जी से कहा कि यह घर के कारोबार, जायदाद की तरफ तवज्जो नहीं देता किस तरह अपनी गुजर करेगा? बाबा बिशनदास ने कहा, ''इसकी तकदीर तुमने बनाई है या भगवान ने बनाई है? इसकी तकदीर बन गई है, यह आपके काम का नहीं। यह जहाँ बैठेगा वहाँ हजारों आदमियों को अन्न–पानी मिलेगा।''

आप देख लें! परमात्मा ने कितनी बड़ी दुनिया बनाई है। हम घर में एक छोटी सी रचना रचा लेते हैं जिसमें कोई बाप बन जाता है कोई बेटा बन जाता है। घर के बुजुर्ग पहले खुद अशान्त हो जाते हैं फिर बच्चों को अशान्त कर देते हैं। दूसरों के घर जाकर न्याय करते हैं लेकिन खुद अपने घर का न्याय नहीं कर सकते।

मेरी जिंदगी उन प्रेमियों के बीच से गुजरी है जिन्होंने मेरे साथ काफी समय गुजारा है, उनमें से कई प्रेमी यहाँ भी बैठे हैं। अगर वे भी मेरे साथ

बैठकर अभ्यास कर लेते तो उन्हें कितनी समझ आ जाती। मैं भी बूढ़ा हूँ ये भी बूढ़े हैं, बूढ़ा होने पर बुद्धि घट जाती है। अगर हम अंदर से जाग जाएं तो बुद्धि चैतन्य हो जाती है दिमाग और सुरत ताजा हो जाते हैं। सन्तों की बुद्धि चैतन्य हो जाती है, नाम की चढ़ाई ऊपर की तरफ है। गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

गुरुमुख बुढ़े न थिए जिन अंतर सुरत ज्ञान।

यह शरीर जरूर बूढ़ा हो जाता है अगर हमारे बुजुर्ग भूल से घर के लोगों का थोड़ा सा फायदा कर दें तो उन्हें बहुत ताने–मेहणें देते हैं हाँलाकि बच्चों का फायदा सोचना उनकी जिम्मेवारी होती है। मेरे साथ भी कुछ ऐसा ही होता था। मैं जब कभी बाहर से आता लाला की बानी सुनता। एक दिन लाला खुश था तो मैंने लाला से कहा कि बच्चों के लिए मुँह से अच्छा लफ्ज बोला करो। लाला ने मुझसे कहा, ''आपके बच्चे नहीं हैं इसलिए आपको पता नहीं।'' बहुत से लोग मुझे समझाते हैं, मैं खुश हो जाता हूँ कि अच्छा भई आपकी मर्जी है। पता नहीं! वह भगवान कृपाल सुन ही रहा था। गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

बिन बोलयां सब कुछ जाणदा, किस पे करिए अरदास

किसके आगे अरदास करें वह बिना बोले ही जानता है, उस दयालु गुरु ने दया करके मुझे बच्चे दिए, गुरमेल आ गया लेकिन लाला जी की वही समस्या थी कि आराम न करो, बस काम करो। भागसिंह से भी कहते कि लड़का काम नहीं करता। वह कहता कि जट्ट का बेटा है अपने आप सीख जाएगा। गुरमेल बच्चा है उसने ज्यादा काम नहीं किया था, मेरे पास अभी आया ही था। मैंने लाला जी से कहा, ''यह गुरु का काम है मेरा काम नहीं, करवाने वाला खुद ही करवा लेगा।'' मैंने गुरमेल से सिर्फ एक ही बात कही, ''बेटा! किसी से पैसे नहीं माँगने हैं। तेरे लिए इतनी ही बात है कि काम करवाने वाला तुझसे अपना काम खुद ही करवा लेगा।''

पाठी जी बैठे ही हैं, अब मेरी मर्जी है मैं जो कुछ बोलूँ। मैं जब 77 आर. बी. से आने लगा तो मैंने पाठी जी से कहा कि हम 16 पी.एस. चलते हैं। जैसे यहाँ अपना घर है वहाँ भी बना लेंगे। मैं जमीन ले लूँगा क्योंकि वहाँ काफी जमीनें बिक रही है तू मेरे साथ चल। कसूर तो हम बूढ़ों का होता है लेकिन हम नुख्स बच्चों में निकालते हैं। पाठी जी ने मुझसे कहा कि आपको पता नहीं इतना बड़ा गृहस्थ कभी छोड़ा जा सकता है? मैंने इससे कहा कि तू कुछ कुर्बानी कर जमीन लड़कों को दे दे क्या फर्क पड़ता है? पाठी जी ने कहा, ''आपको पता नहीं।'' मैंने कहा अगर लड़के तुझे छोड़ गए? माफ करना पाठी जी बैठे ही हैं, अब पाठी जी लड़को के पीछे फिरते हैं।

मैं यह बात इसलिए कर रहा हूँ क्योंकि मैंने इन लोगों के साथ जिंदगी बिताई है। दर्शन सिंह भी बैठा है मैंने इससे कहा कि मैंने तुम्हारे साथ खाना भी खाया है अगर मैंने कभी खाने में नुख्स निकाला हो या किसी ने मुझे कभी सिनेमा में देखा हो तो बाजू खड़ी करके बड़े शौक से मुझे बताए। दर्शन सिंह भी वहाँ नजदीक में ही रहता है, वह मुझे समझाने लगा कि आपको नहीं पता।

जो आदमी अपने बच्चों के साथ नहीं निभा सकता वह अपने पड़ोसी के साथ कैसे निभाएगा? यह जरूर कह देते हैं कि हम डेरे चले जाएंगे। मेरे पास भी ऐसे दो आदमी आए जिन्होंने कहा कि हम डेरे में ही रह जाएंगे। हमारे यहाँ बाऊजी आए उन्होंने कहा कि मैं सन्तों के डेरे में रह जाऊँगा क्योंकि उसके पैदा किए लड़कों ने तो उसे जवाब दे दिया था और उसने कहा था कि मैं गाड़ी के नीचे आकर मर जाऊँगा। मुझे करंट आया मैंने कहा, ''क्या डेरे में बैठना आसान है?''

मेरे कहने का भाव मैं अपने गुरु का धन्यवादी हूँ जिसने दया करके सेवा के लिए मुझे बच्चे दिए हैं, आगे इनके साथ निभाना मेरा फर्ज है। मैं

कल को यह कहूँ कि बच्चे ठीक नहीं तो यह मेरी गलती होगी। जब बूढ़े हो जाते हैं तब हमारा फर्ज बनता है कि हम माला फेरें। पच्चीस साल तक ब्रह्मचारी जीवन पूरा हो जाए तो इंसान का धर्म है कि पचास साल तक उसे जो जिम्मेवारियाँ मिली हैं उन्हें निभाए। उसके बाद भजन–सिमरन करना हमारा पहला धर्म है। अगर बूढ़ा भजन करे बच्चों को आर्शिवाद दे तो क्या बच्चे रोटी नहीं देंगे? बच्चे आपके चारों तरफ परकार की तरह घूमेंगे।

मेरा भाव किसी की निन्दा करने का नहीं है, मेरे साथ काफी कुछ बीता है। मैं यह भी बताया करता हूँ कि प्यासे को पानी मिले तो वह इज्जत से पानी पीता है। आपको बच्चे मुफ्त में मिले हैं तो आप उनकी कद्र नहीं करते। मैं अपने गुरु का बहुत धन्यवादी हूँ।

***

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज के मुखारविंद से

13 मार्च 1994

भजन गाने के बारे में

परमात्मा सावन–कृपाल का धन्यवाद है जिन्होंने दया करके हमें अपना यश करने का मौका दिया है। ज्यादातर वही प्रेमी भजन बोलने की कोशिश करें जिन्होंने संगत में प्रैक्टिस की होती है क्योंकि उनके पीछे संगत ने भी बोलना होता है।

पश्चिमी प्रेमियों के लिए इन भजनों की महानता और भी बढ़ जाती है क्योंकि उन्हें बार–बार भजन सीखने, प्रैक्टिस करने और भजनों को उच्चारण करने का मौका मिलता है। भजनों की बहुत महानता होती है क्योंकि भजन कमाई वाले महात्माओं ने लिखे होते हैं। भजन महात्माओं के पवित्र हृदय की कल्पना होती है। ये भजन महात्माओं की पवित्र जुबान से पवित्र चितवनी में से निकले होते हैं।

भजन गाना यश करने का एक मौका होता है क्योंकि हमारा मन सीधी नम्रता दिखाने नहीं देता कि हम इतने कमजोर, कंगाल और गरीब हैं। अगर हम सतगुरु के आगे यह कहें कि तू कुलमालिक है, तू सच्चा बादशाह है तो सतगुरु हमारे ऐसे लफ्जों को पसंद नहीं करते।

मेरा जातिय तर्जुबा है कि एक बार परमात्मा कृपाल चारपाई पर बैठे थे और मैं आगे कुर्सी पर बैठा था। मैंने आपको सच्चे पातशाह कहा तो आपने मेरा कान पकड़कर मरोड़ दिया। मुझे अच्छी तरह याद है कि जब मैं आपके सामने भजन बोलता था तो कई बार आपकी आँखों में से पानी भी बहने लगता था। आप एक–एक लफ्ज के साथ अंगुली हिलाते थे कि यह ठीक है। भजनों में मैं आपको सच्चे पातशाह, कुलमालिक, करण–कारण सब कुछ ही कहता था और मेरे अंदर जो कमियाँ थी आप वह भी सुनते थे।

भजन गाना सेवक के लिए गुरु की बड़ाई करने और अपनी नम्रता जाहिर करने का मौका होता है। मैंने कभी भी दिखावे के तौर पर भजन नहीं बोले थे, यह मेरी आत्मा की आवाज होती थी जो वह खुद ही प्रेरणा देकर मुझसे बुलवाते थे। मैं जो कुछ बोलता था, वह अंदर से ही बोलता था आप अंदर की आवाज को, आत्मा की तड़प को अच्छी तरह से जानते थे।

गुरु को हमारे प्यार की जरुरत नहीं होती लेकिन हमें गुरु की दया की बहुत जरूरत होती है, वह तो खुद अपने गुरु के प्यार में मस्त होता है। आपके आगे खड़े होकर मेरी आत्मा से आवाज निकलती थी और आप अपने गुरु के प्यार में मगन होकर आँखों से पानी बहाते थे। कबीर साहब कहते हैं, ''घायल की हालत घायल ही जानता है।''

गुरु नानकदेव जी ने कहा था, ''रोगी की बात को रोगी ही गौर से सुनता है। जो खुद प्यार में डूबा होता है उसे ही सतगुरु के प्यार की कद्र होती है, वह प्यार की आवाज को सुनकर खुश होता है। उसकी लाखों सखियाँ होती हैं जो एक से बढ़कर एक होती हैं।''

प्यारेयो! हम तो सिर्फ धरती के सतसंगियों को ही जानते हैं लेकिन उसकी सखियाँ अंदर भी होती हैं जो हमसे कहीं ज्यादा उस पर मस्त होती हैं, उन्हें दर्शनों का ही आहार मिलता है। आपके आगे मेरी सदा यही आवाज निकली कि मुझे आप जैसा संसार में एक भी नहीं मिलेगा। अंदर भी वही है जो बाहर हमें अपने साथ जोड़ता है, मेरे जैसी तो तुझे लाखों–करोड़ो ही ढूंढती फिरती हैं लेकिन मुझे तेरे जैसा कोई भी नहीं मिलेगा।

प्यारेयो! सन्त हमेशा जिस स्वरूप की महिमा करते हैं कि जब हमें उसके दर्शन नहीं होते तो हमारी हालत पागलों जैसी हो जाती है। बेशक दुनिया में कितने भी सुंदर क्यों न हो, हम परियों को ज्यादा से ज्यादा सुंदर कहते हैं लेकिन वह परियों से भी सुंदर होता है। स्वामी जी ने कहा हैः

मेरे गुरु का कोई स्वरूप देखे हो जाए हूर परंदरी

जब शिष्य अपने अंदर एक बार गुरु स्वरूप को प्रकट कर लेता है तो वह उसे किसी भी कीमत पर छोड़ने के लिए तैयार नहीं होता।

यह आश्रम की बात है कि इंग्लैंड से एक लड़की आई थी, उसके दाँत में बहुत दर्द था। मैं चौबारे से नीचे आया उस समय उसका ख्याल गुरु की तरफ टिका हुआ था, मसला तो ख्याल टिकने का ही है उसे बहुत ही अच्छे दर्शन प्राप्त हुए। उसके बाद वह कई दिन वहाँ रही। वह जब भी दर्शनों के समय मिलती तो मुझसे कहती कि मुझे फिर से वैसे दर्शन हो जाएं। वह स्वरूप हमारे अंदर हैं, हम जब भी गुरु के सामने बैठें अपने दिल से दिल की राह बना लें, वह आँख बना लें जिससे वह दिखता है।

हर सतसंगी का अपना–अपना बर्तन होता है, हम अपनी–अपनी किस्मत के मुताबिक प्राप्त कर रहे होते हैं। शीशे में नुख्स नहीं होता हम शीशे में जैसा चेहरा देखते हैं वैसा ही दिखाई देता है। मसला तो यह है कि हमारा चेहरा कैसा है? गुरु शीशे की मिसाल होता है। पहले यह तुक मैं अपने पिता से सुनता रहाः

सज्जन मुख अनूप अड्डे प्रहर निहारसा
फिरदा कित्थे हाल जे डिट्ठा तां मन थराप्या

मेरे पिता सुबह–शाम बानी पढ़ते थे, हमारे घर में गुरबानी का काफी प्रचार था, मेरे पिता भाईयों से भी बानी पढ़वाते थे। बचपन से ही मेरा अपने पिता से पहला सवाल यह था कि इस तुक का अर्थ क्या है, जिसका गुरु साहब ने जिक्र किया है कि किसका मुँह देखें? मेरे पिता ने कहा कि मैं तुझे इसका अर्थ नहीं बता सकता क्योंकि मुझे इसका ज्ञान नहीं मैं तो सिर्फ पढ़ता हूँ। फिर मैंने इस तुक को बहुत रटा और कई भाईयों से भी पूछा लेकिन इसका जवाब वही दे सकता था जिसके अंदर ये गुण हों।

प्यारेयो! परमात्मा कृपाल ने मेरी आत्मा की आवाज सुनी और आप दया करके खुद ही आए। आत्मा तो बचपन से रोज ही पुकारती थी कि तू

जहाँ कहीं है मुझे मिल। दुनियावी तौर पर आपको पहले न देखा था और न आपका कोई पत्र ही मिला था। आपको दया आई आपने बहुत लम्बा रास्ता तय करके इस गरीब आत्मा को सहारा दिया।

यहाँ बहुत से प्रेमी बैठे हैं जिन्होंने महाराज कृपाल के दर्शन किए हैं। हर बंदे का अपना–अपना बर्तन होता है, अपनी–अपनी आँख होती है और अपनी–अपनी गृहणशक्ति होती है। जिसका जैसा ख्याल था उसने वैसा ही देखा। मुझे अच्छी तरह याद है कि एक प्रेमी को नाम मिला, महाराज जी ने उसे दो–तीन बैठके दी लेकिन वह यही कहता रहा जितनी देर आप हाथ रखते हैं उतनी देर ही प्रकाश आता है। अनुभव हमें अपने कर्मों के अनुसार ही होता है। सैंकड़ो आदमियों में से थोड़े ही निकले जिन्हें कोई अनुभव नहीं हुआ। महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''मियाँ–बीवी को भी एक जैसा अनुभव नहीं होता क्योंकि दोनों के कर्म एक जैसे नहीं होते।''

जब महाराज जी प्रेमियों को नामदान पर बिठाने लगे तो मैंने महाराज जी के आगे प्यार के लहजे से विनती की, ''मैं इन्हें क्या समझाऊँ अगर आप इन पचास प्रेमियों को अपना खुल्ला दीदार दे दें तो मंदिर–मस्जिद का झगड़ा खत्म हो जाए और ये सारे भरपूर हो जाएं। इन्हें पता लगे कि हम सचमुच भगवान के पास आ गए हैं।''

महाराज जी ने बड़े गर्म लहजे से कहा, ''तू लोगों से मेरे कपड़े न फड़वा, जो मैं कह रहा हूँ वह कर।'' वह प्रेमी हमेशा ही सतसंग में आता है यहाँ भी आया हुआ है अच्छा है, सिफत के काबिल है, लेकिन अभी भी उस वक्त को याद करता है कि मैंने भगवान को बाहर की आँखों से देखकर भी ऐतबार नहीं किया, मैं कितनी भूल में रहा।

महाराज जी गंगानगर सतसंग देकर आए। कुछ दिनों बाद हमारे बचन सिंह मस्ताना ने पूछा कि अब महाराज जी सतसंग देने के लिए कब आएंगे? मुंशी राम पुराना सतसंगी है वह महाराज जी के काफी नजदीक

भी रहा है। उसने कहा, ''कृपाल, अजायब पर आशिक है यह तो अब अजायब की मौज है वह कृपाल को कब बुलाते हैं अगर वह अंदर से बुलाएं तो बाहर से बुलाए बिना भी आ सकते हैं।''

मैं उनके देखने को समझता था या वे मेरे देखने को समझते थे। हिन्दुस्तान में आँखों में सुरमा डालने का आम रिवाज है। जब मैं छोटा था तो हमारे माता जी कहा करते थे कि बेटा सुरमा तो हर एक ही डाल लेती है लेकिन देखना किसी–किसी को ही आता है। कोलम्बिया में भी आँख में सुरमा डालने का खूब रिवाज है। इसी तरह गुरु की तरफ देखना भी किसी–किसी को ही आता है अगर हर एक को उस तरह झाँकना आ जाए तो आँख बन जाए, उसे सुरमा डालकर गुरु को रिझाने की जरूरत नहीं पड़ती। उसकी आत्मा का आँसू उसकी आँखों का सुरमा बन जाता है। उसे पता है कि गुरु की तरफ किस तरह देखना है? जब हजरत बाहू को अंदर–बाहर गुरु का ऐसा स्वरूप दिखा तो हजरत बाहू ने अपनी मुबारक जुबान से यही कहाः

ऐह तन मेरा चश्मा होवे मैं मुर्शिद देख न रज्जां हू
लूं लूं दे मुड़ लख लख चश्मा इक खोला इक कज्जा हू
इतना ड्ढिठयां सब्र न आवे मैं होर किते वल भज्जा हू
मुर्शिद दा दीदार बाहू मैं लख करोड़ा हज्जा हू

सावन दयालु ने रिमझिम लाई, जब यह भजन लिखा गया उस समय पप्पू को इस भजन को ट्रांन्सलेट करने में बहुत ही दिक्कत पेश आई। जब इस तुक पर आया

मैं भर भर नैनां दे जाम पिला दूँ, तू इक वारी नजरां मिलाके तां देख

पप्पू ने कहा कि यह कैसे हो सकता है? मैं हँस पड़ा और मैंने कहा अफसोस! मुझे शादीशुदा को समझाना पड़ रहा है, तुझे अभी वह जाम पिलाया नहीं होगा जो तुझे पता नहीं। प्यारेयो! औरत के पास ऐसी कौन

सी चीज है कि मातलोक के इंसान औरत पर दिवाने हुए रहते हैं। यहीं नहीं स्वर्गों में भी देवता, देवियों के पीछे दिवाने हुए फिरते हैं। आँख ही आँख को आकर्षित करती है। जिस पत्नी की वह आँख बन जाए वह उस आँख से काम लेती है कि किस तरह पति को रिझाना है, उसका पति जिंदगी भर दूसरी तरफ ख्याल तक नहीं करता क्योंकि उसकी आँखों में वही रूप समा जाता है।

इसी तरह जब शिष्य की भी आँख बन जाती है उसे एक बार वह मनमोहनी मूरत मिल जाती है तो आँखों को संतोष आ जाता है। वह किसी और की तरफ आँख उठाकर नहीं देखता क्योंकि दुनिया में उस जैसा कोई सुंदर नहीं होता। कबीर साहब जब अंदर के दर्शन की महिमा करने लगे तो आपने कहाः

जब तू आवें आँख में आँख झाप मैं लूँ
न मैं देखूं और को न तुझे देखन दूँ

हे मालिक हे गुरुदेव! अगर तू एक बार मेरी आँख में आ जाए तो मैं अपनी आँखें बंद कर लूँ, न मैं दुनिया के किसी जीव को देखूँ न तुझे किसी को देखने दूँ।

मुझे महाराज सावन सिंह जी और परमात्मा कृपाल के चरणों में बैठने का मौका मिला है। मैं उस समय भी सतसंगियों को प्रैक्टिस करते हुए देखता रहा हूँ जिनका ध्यान बनता था वे फौरन आँखें बंद कर लेते थे। महाराज जी के समय मैंने देखा कि जब मेरा ध्यान टिकता तो मैं आँखें बंद कर लेता कि मैं इस स्वरुप को पकड़ लूं। इसमें किसी पश्चिमी या हिन्दुस्तानी प्रेमी का सवाल नहीं। जो आकर सिर झुकाकर बैठ गए या जिन्हें नींद आ गई या इधर-उधर झाँकते हैं उनकी वह आँखें नहीं बनी होती। वे जैसे आते हैं वैसे ही चले जाते हैं लेकिन बहुत से प्रेमी ऐसे भी होते हैं जो दर्शनों की झोली भरकर ले जाते हैं।

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे कि जब आप संगत में आए हैं तो आपको यह भी पता न लगे कि आप कहाँ बैठे हैं? आपका ध्यान गुरु के चेहरे पर, माथे पर टिका होना चाहिए। चाहे उस समय गुरु किसी से बात करता है या पाठी पाठ करता है लेकिन आपका मकसद तो दर्शनों का है। जब आपकी आँखें दर्शनों से भर जाती हैं उस समय आप जल्दी से लोगों के साथ बातचीत करना शुरु न करें। आप जितनी बातें करेंगे आपका हृदय दर्शनों से खाली होता जाएगा। अभ्यास में एक घंटा जरूर लगाएं ताकि आपको दर्शनों का लाभ हो सके। आप लोग भजन बोलते हैंः

ओ अक्ल के अंधे देख जरा तैनूं सतगुरु दित्तियां अखियां ने

तुझे सतगुरु ने आँखें दी है। एक आँख मोती के मूल्य जितनी है और एक आँख कौडी के मूल्य जितनी है। हम यह भजन भी बोलते हैंः

ओह सोहणा ऐना सोहणा सी जां दिस्सदा सी चंद चढ़दा सी

वह इतना सुंदर था कि उसको देखते थे तो लगता था कि चाँद चढ़ आया है, हमारा मन उसके दरबार में मोतियो के आँसू बहाता है। उसके माथे का तेज इतना था कि उससे डरते हुए चाँद और सूरज भी नहीं चढ़ते थे। जिन्हें दर्शनों की झलक मिल जाती है, जिनकी आँखें खुल जाती है, उनकी आँखें बन जाती है, दिल से दिल की राह बन जाती है। हम प्रैक्टिस में लगे हुए हैं, हमारे ऊपर परमात्मा कृपाल दया करे। वह हमेशा ही दया करते हैं हमें दया प्राप्त करने के लिए बर्तन बनाना है।

प्यारेयो! महाराज जी कहानी सुनाया करते थे कि ऊँट पर एक सवार लैला के शहर जा रहा था। मजनूं, लैला का आशिक था मजनूं उस सवार से बातें करता गया कि तू लैला से यह कहना, वह कहना। इस तरह वह ऊँट वाले सवार के साथ बारह मील तक दौड़ता हुआ गया लेकिन उसका लैला को संदेश देने का जो किस्सा था वह फिर भी खत्म नहीं हुआ। बंदा एक दुनियावी इश्क के लिए इतनी मशक़्क़त कर सकता है।

यही हालत इस गरीब आत्मा की है। आते ही भजन के बारे में ऐसी बात चली कि महाराज कृपाल की बातें याद आई, मिलाप याद आया कि आपका कितना तेज था आप कितने सुंदर और प्रकाशमान थे, दिल को कितना खींचते थे। इस गरीब आत्मा की हालत भी मजनूं वाली है कि कहानी छेड़ने से टाईम का पता नहीं लगा। आज प्रेमियों के भजन बोलने की बारी है। सच्चाई तो यह है कि अभी भी उनकी बातें करके दिल को तसल्ली नहीं हुई, प्यास खत्म नहीं हुई। दिल करता है कि उनकी याद के और भी किस्से–कहानियाँ बोलते रहें लेकिन अब टाईम हो गया है।

आप यह भी कहा करते थे किसी ने मियाँ मजनूं से कहा, ''रब तुझसे मिलने के लिए खड़ा है।'' मजनूँ ने कहा, ''लैला बनकर आ जाए मैं उससे बात कर लूँगा।''

किसी ने राँझा को ताना मारा, ''तू अपना इतना बड़ा देश तख्त हजारा छोड़कर यहाँ पर इनकी भैंसो को पानी पिला रहा है, क्या तूने कभी हीर देखी है? हीर तो काली है।'' राँझा ने कहा, ''तुम हीर को मेरी आँखों से देखो दुनिया को हीर की आधी शक्ल दिखाई देती है, मैं हीर की पूरी शक्ल देखता हूँ।''

तख्त हजारा सच्चखंड है। वह 'राँझा–शब्द' देह धारण करके हमारी आत्मा हीर को ब्याह कर ले जाने के लिए आया है। हीर के माता–पिता हीर को खेड़ो के साथ भेजना चाहते थे लेकिन हीर उन्हें पसंद नहीं करती थी वे हीर को यम दिखाई देते थे। जब आत्मा को राँझा पति मिल जाता है तो यम उसका क्या बिगाड़ सकते हैं? 'राँझा–शब्द' यह नहीं देखता कि यह औरत है या मर्द है, यह पश्चिम का है या पूर्व का है। काला है या गोरा है वह तो अपनी आत्मा को ही पहचानता है, आत्मा को अपने साथ जोड़कर अपने तख्त हजारा में ले जाता है।

***

RNI No - RAJHIN/2003/9899